12) सर्पदंश के लिए घरेलु उपचार

सर्पदंश स्थान के ऊपर मजबूती से रस्सी बांधों तथा साफ ब्लेड या चाकू को डिटोल/सेवलान/स्प्रिट में डुबोकर जख्म के बगल में या थोड़ी नीचे काटकर खून को बहने दें ताकि विषयुक्त खून बह जाये तथा विष का प्रभाव कम हो जाये। इसके तुरन्त बाद पशु चिकित्सक से इलाज करायें।

13) मुंह के छाले के लिए घरेलु उपचार

खुर तथा मुंहपका रोग में पशुओं के मुंह में छाले पड़ जाते हैं। ये छाले जीभ के सिवाय मुंह के अन्दर अन्य हिस्सों पर भी दिखाई देते हैं। जिसके कारण पशु चारा खाना बन्द कर देता है। जिसकी वजह से पशु का स्वास्थ्य एवं दुधारू पशु का दुग्ध उत्पादन कम हो जाता है। इसके लिए निम्न दवाई का इस्तेमाल करें:

1. अमकली 125 ग्राम और 50ग्राम पीलीकटीली दोनों को 2 लीटर पानी में उबालें तथा जब पानी करीब एक लीटर रह जायें तो बीमार पशु को दें।
2. आधे सेर एप्सम साबट गर्म पानी में डालकर पिलाना चाहिए।

विष खा जाना

कभी-कभी कोई पशु चारे के साथ अनजाने में विषैला कीड़ा खा लेता है या कभी-कभी किसी व्यक्ति द्वारा भी पशु को रंजिशन विष दे दिया जाता है। ऐसी स्थिति में निम्नलिखित उपचार करें:

1. डेढ़ सेर घी में एक सेर एप्सम साबट मिलाकर पिलाना चाहिये।
2. कोई जुलाब की दवा दे देनी चाहिये।
3. एक सेर गरम दूध में 25 ग्राम तारपीन का तेल अच्छी तरह मिलाकर पिलाइये और फिर 250 ग्राम केले की जड़ के रस में 10 ग्राम कपूर मिलाकर पिलाना चाहिये।

15) निमोनिया के लिए घरेलु उपचार

अधिकतर यह रोग शीतकाल में होता है। सर्दी जग जाने से पशु को बुखार आ जाता है। नाक से पानी बहता है। और कुछ-कुछ खांसी भी आने लगती है। पसलियों में खड़-खड़ की आवाज आती है। इस स्थिति में पशु को गरम स्थान में रखना चाहिये और पीठ पर कम्बल या झूल डालनी चाहिये। निम्न औषधियां देने से पशु को आराम मिलता है:

1. सौंठ 100 ग्राम, अजवायन 100 ग्राम, चाय पती 25 ग्राम मेथी 100 ग्राम तथा गुड़ या शीरा 500 ग्राम आदि को लगभग 2 लीटर पानी में ओटकर दिन में 2 बार पिलाना चाहिये।
2. एक चुटकी कपूर तथा एक पाव लहसुन दोनों को मिलाकर खिला दीजिये।
3. आधा सेर अलसी और एक सेर चावल दोनो को उबालकर गरम पानी में मिलाकर पिलायें।

आलेख

डा. शिवानी कटोच डा. दिवेश ठाकुर एवं डा. आलोक शर्मा

पशु चिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय

चौ. स. कृ. हि. प्र. कृषि विश्वविद्यालय

प्रसार पत्रक क्रमांक - 3

पशुधन का सम्मान "गोधन आधारित संरक्षित खेती एवं घरेलू पशु उपचार"

सौजन्य से

National Agricultural Innovation Project on Biodiversity

जैव विविधता

राष्ट्रीय कृषि नवाचार परियोजना

पशु चिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय

हि. प्र. कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर 176 062

गाय का दूध विश्व का सर्वोतम भोज्य पदार्थ है। हमारे स्वदेशी नस्ल के गोपशु आदि विदेशी नस्लों से काफी अच्छे हैं।

पोंप ने कहा है - 'जेकर खेत पड़ा नहीं गोबर, उस किसान को जानो दूबर'। पशु के गोबर और मूत्र से अनेक प्रकार के खाद बन रहे हैं। इसमें केंचुआ का खाद काफी प्रचलित होता जा रहा है। गोबर की खाद के प्रयोग से ही गई खेती से लाभ ही लाभ मिलते हैं:

* भूमि में सूक्ष्मकारी जीवाणु (राइजोबियम) बढ़ते हैं। इससे अलग से कृत्रिम रूप से तैयार किये गये राइजोबियम कल्चर की आवश्यकता नहीं पड़ती है।
* इससे भूमि का प्राकृतिक रूप बना रहता है, जो खराब भूमि है वह भी ठीक हो जाती है।
* सिंचाई के लिए कम पानी लगाना पड़ता है। इससे भूमि की जल ग्रहण व रोकने की क्षमता बढ़ जाती है। वर्षा का जल सोखने व रोकने की क्षमता बढ़ती है। फलत: भूमि में जल स्तर बढ़ता है।
* खेत एवं गांव के कूड़े - कचरे का उपयोग होता है, वह प्राकृतिक चक्र में आ जाता है।
* किसानों और बैलों को अधिक काम मिलता है।
* पर्यावरण में सुधार होता है। खाद्यान्न पौष्टिक एवं सुस्वाद होता है
* ग्रामीणों को रोजगार मिलता है। उसका अपना स्वावलंबी तंत्र स्वावलंबी कृषि का आधार बनता है। विदेशी मुद्रा की बचत होती है। देश संपन्नता की ओर बढ़ता है।
* कीटनाशकों के जहर का अंश हमारे शरीर में नहीं पहुंचता है।

जैविक नियंत्रण

रासायनिक कीटनाशक फसल के शत्रु कीटों के साथ - साथ मित्र कीटों को भी मार डालते हैं जबकि जैविक कीट नियंत्रण केवल शत्रु कीटों को ही नष्ट करते हैं।

1) एक कीटनाशक का विवरण इस प्रकार है: पांच लीटर देशी गाय का मुत्र और एक लीटर नीम के तेल को 100 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ में छिड़काव करना चाहिए। यह दवा फसल संरक्षक और संवर्धक है। नीम के तेल के साथ नीम के पते, आक के पते, तुलसी के पते, धनिए के पते गोमूत्र में डालकर छिड़कने से लाभ होता है।

2) गाय की खट्टी छाछ (ताबे के पात्र में रखी हुई) का पानी के साथ छिड़काव बहुत लाभकारी सिद्ध हुआ है। 15 कि.ग्रा. ताजा गोबर, 15 कि.ग्रा. ताजा देशी गाय का गोमूत्र, आधा कि.ग्रा. गुड़ और 15 लीटर पानी मिट्टी के घड़े में मिलाकर रखें। घड़े का मुंह कपड़े मिट्टी से पैक कर दें। पांच दिन बाद इस घोल में 200 लीटर पानी मिलाकर एक एकड़ में छिड़कें तो फसल में यूरिया देने की आवश्यकता नहीं रहेगी। जब यूरिया देने का समय आये, तो इसी मिश्रण का प्रयोग करें। सिंचाई के पानी के साथ यह घोल मिलाकर सिंचाई के पानी के साथ यह घोल मिलाकर सिंचाई करें तो भी लाभ होता है। इस प्रकार की अनेक विधियां हैं, जिनका व्यवहार कर गोधन आधारित संरक्षित खेती की जा सकती है।

3) भूमि संस्कार

ऋषि पराशर के अनुसार कृषि भूमि जीवंत होनी चाहिए। निर्जीव भूमि में वनस्पति का उगना असंभव है - 'जंतुनां जीवनं कृषि'। कृषि योग्य भूमि को सजीव बनाने के लिए वट वृक्ष के नीचे की अथवा चीटियों के बिल से निकली 15 कि.ग्रा. मिट्टी एक एकड़ भूमि में छिड़काव करनी चाहिए। इससे भूमि में करोड़ों जीवाणु और केंचुओं का उत्पादन होता है। भूमि संस्कार से कृषि उत्पादन अधिक मिलता है।

4) बीज संस्कार

बीज को बोने से पहले गोबर और गोमूत्र के घोल में 3 घंटे भिगोकर छांव में सुखा लेना चाहिए। इससे बीज रोगमुक्त हो जाता है।

5) जल संस्कार

दस कि.ग्रा. देशी गाय का गोबर 250 ग्राम गाय का शुद्ध घी, 500 ग्राम शहद लेकर दो घंटे तक मिलाना चाहिए। इसे 200 लीटर पानी में घोलने से अमृत पानी बनता है। सिंचाई की हुई जमीन पर 200 लीटर अमृत पानी को एक एकड़ भूमि में छिड़कना चाहिए। इससे भूमि दीर्घकाल के लिए उर्वर हो जाती है। 15 दिनों में एक बार अमृत पानी छिड़कने से कृषि उत्पादन अधिक होता है।

6) अफारा के लिए घरेलु उपचार

कई बार अधिक मात्रा में हरा चारा खाने से पानी का बाई ओर का पेट फूल जाता है। पशु को सांस लेने में कठिनाई होती है तथा पशु असामान्य व्यवहार प्रदर्शित करता हैं यह स्थिति पेट में गैस बनने की वजह से होती है जो कि अफारा कहलाती है। ऐसे में यदि पशु को प्राथमिक उपचार के तौर पर एक लीटर अलसी के तेल में 30 मि.ली. तारपीन का तेल मिलाकर पिलायें या पानी में 15 ग्राम हींग को घोलकर पिलाने से पशु को राहत मिलती है।

7) जहरबाद के लिए घरेलु उपचार

पशुओं में गैर पटकना, थर - थर कांपना, डगमगाते हुये चलना, सांस में कठिनाई अनुभव करना, शारीरिक ताप का बढ़ना इत्यादि जहरबाघ रोग के मुख्य लक्षण है। ऐसी स्थिति में प्राथमिक उपचार के तौर पर इमली पानी में नमक का घोल बनाकर पिलायें या कोयले का 200 ग्राम पाउडर एक लीटर पानी में घोल बनाकर पिलाने से रोग की तीव्रता कम होती है।

8) खांसी के लिए घरेलु उपचार

कभी - कभी पशु को ठंड के मौसम में असंक्रामक खांसी हो जाती है। अगर कपूर की एक टिकिया को 7 चम्मच शहद में और गुड़ के साथ मिलाकर दिन में तीन बार चटायें तो पशु राहत महसूस करता है।

9) कब्ज के लिए घरेलु उपचार

कई बार ज्यादा चारा, जहरीला या दूषित अनाज खाने से कब्ज की शिकायत होती है। ऐसे पशु को 100 ग्राम सादा नमक, 200 ग्राम भंगसल्फ तथा 30 ग्राम सौंठ या अदरक को आधा लीटर पानी में घोलकर पिलाना चाहिये।

10) दस्त के लिए घरेलु उपचार

दस्त लगने पर पशु को पहले दिन आधा लीटर अलसी का तेल या आधा कप अरंडी का तेल पिलायें तथा दूसरे दिन 8 चम्मच खड़िया पाउडर, 4 चम्मच कत्था एवं 2 चम्मच सौंठ गुड़ के पानी में मिलाकर पिलायें।

11) जख्म के लिए घरेलु उपचार

सर्वप्रथम साफ रूई या कपड़े को टिंचर आयोडिन में भिगोकर जख्म की सफाई करें। तत्पश्चात हल्दी में मक्खन या सरसों का तेल मिलाकर जख्मों पर लगाने से आराम मिलता है।